होली 'हो...ली' ना..!!

होली भारतीय संस्कृति के प्रमुख त्योहारों में से एक है। खुशियों से सराबोर कर देने वाला, रंगों की बौछार से कोरे मन को रंग देने वाला होली का पर्व अद्भुत और अनूठा है। छोटे-बड़े, अमीर और गरीब, गोरे-काले और विभिन्न धर्म और संप्रदाय के लोग इस पर्व पर इस तरह घुल-मिल जाते हैं, जैसे सतरंगी छटा में अलग-अलग रंग एकाकार होते हैं। सिर्फ चेहरे और कपड़े नहीं रंगे जाते, यह पर्व फिज़ाओं तथा दिल की भावनाओं में भी रंग घोल देता है। कहने को तो यह सिर्फ होली है व इसमें परंपरागत रीति से गली-मोहल्लों से चुन-चुन कर लकड़ियाँ जला दी जाती हैं परंतु देखना यह है कि क्या होलिका जली है? कौन है यह होलिका? कब से जलाते आ रहे हैं? कब जलेगी ये होलिका?

प्रश्न अनुत्तरित है, परंतु विचारणीय है। कहते हैं कि हिरण्यकश्यप, जो स्वयं को भगवान मानता था, ने अपने पुत्र प्रहलाद को विष्णु के बदले अपनी पूजा करने के लिए प्रेरित किया, परंतु प्रहलाद तो विष्णु को ही परम सद्गुरू,परम शक्ति मान रहा था। प्रभु शक्ति के सामने उसे कुछ सूझता नहीं था।

हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को अनेक यातनाएं दीं, मृत्युदंड देने के कई उपाय किए, परंतु वह हर बार बच गया।

अंततःउसे एक युक्ति सूझी, उसकी बहन होलिका को अग्नि में भी सुरक्षित रहने का वरदान प्राप्त था।

अत: उसे प्रहलाद को गोद में लेकर अग्नि ज्वाला में जलने का आदेश दिया। परंतु परमात्मा की कृपा से प्रहलाद फिर भी बच गया और होलिका जल गयी। तब से प्रतिवर्ष होलिका की परंपरा चली आ रही है।

होली में घर-घर से लकड़ियाँ चुनकर जलायी जाती हैं, फिर लोग फ़ाग गाते हैं। होली दहन के दूसरे दिन रंगों की बौछार होती है, सब खुशियों में झूमते-नाचते हैं, गले मिलते हैं।

वास्तव में इस समूचे परिदृश्य का आध्यात्मिक मर्म है। प्रहलाद वास्तव में आत्मा का प्रतीक है, जो विषय-विकारों के वशीभूत होकर हिरण्यकश्यप जैसी आसुरी शक्तियों के चंगुल में फंसी हुई है, जिसमें आज सारा संसार जल रहा है। यह भी सत्य है कि आज संसार में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार सर्वत्र व्याप्त है और इन विकारों की आग की होली में हर दिल जल रहा है। इस होली में आत्मा

रूपी प्रहलाद को सुरक्षित बनाने के लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा से बुद्धियोग जुटाकर ऐसी 'योगाग्नि' पैदा करनी है, जिसमें संसार की समस्त बुराइयाँ भस्म हो जाएँ और लकड़ी कंडे एकत्र करने का भाव यही है कि हमें घर-घर से और जन-जन से पुराने पतित संस्कार और विकारों की लकड़ी एकत्र कर ज्ञान-योग की होली में स्वाहा करना है। तभी अनीति, अधर्म, भ्रष्टाचार और दंभ का प्रतीक हिरण्यकश्यप मारा जाएगा।

होली अर्थात 'हो-ली' अर्थात् बीत गया। बीती हुई बात का भी चिंतन न करें। किसी ने कुछ कहा, अभद्र व्यवहार किया, कुछ नुकसान हो गया, उसको सदा के लिए भुला दें। होली माना खेल - यह संसार एक नाट्यशाला है। हम सब खेल खेलने वाले पात्र हैं। सबके साथ मित्रता के साथ खेलें और ज्ञान गुणों का रंग सभी को लगाएं। प्रेम के गीत गायें। आपसी भेदभाव और वैरभाव बुराई को भुलाकर सुख-शांति से जियें और सर्व को जीने दें।

होली का अर्थ ही है कि हो गया। अब नये उमंग के रंग मेरे मन रूपी चेहरे पर सदा रहे, तथा जो भी मेरे सामने आये उसे भी उसकी खुशबू मिलती रहे। होली माना पवित्रता। तो ये शुद्ध और शुभ भाव हरेक प्राणी और प्रकृति के प्रति बना रहे। यही संकल्प अगले वर्ष में आने वाले होली के त्योहार तक बनायें रखेंगे ना! बस... कुछ ज़्यादा मेहनत नहीं। हमें सिर्फ श्रेष्ठ संकल्प दृढ़ता के साथ करना है कि होली के रंग को फीका नहीं पड़ने देंगे। परंतु ये होगा कैसे? उसके लिए मन रूपी शक्ल को खुशनुमा बनाने के लिए हम रोज़ मन को अच्छे संकल्पों रूपी भोजन स्वीकार करायेंगे और रोज़ नये उमंग के साथ उसका अनुसरण भी करेंगे। इस संकल्प की पूर्ति के लिए परमात्मा के द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग को मन का हिस्सा बनायेंगे। परमात्मा के साथ योग लगाकर उन संकल्पों को साकार करने के लिए शक्ति भी लेंगे। बस... फिर तो अगली होली के त्योहार तक हम सुख शांति समरसता और सौहार्द की खुशबू बिखेरकर अपने जीवन को सफल कर ही लेंगे।

बर्तमान को जीना... - पेज 2 का शेष

समय को गंवाने के लिए। ★ अणु विस्फोट से उत्पन होने वाली शक्ति की जानकारी संसार को है। लेकिन संकल्प में जो शक्ति होती है, उसकी जानकारी होना आवश्यक है। इसमें अणु से भी अधिक शक्ति होती है। बस इसका विस्फोट कैसे हो यह खोज का विषय है ।

★ जब हम कोई संकल्प करते हैं तो दो वृत्त बनते हैं। एक को ध्वनि वृत्त और दूसरे को भाव वृत्त कहते हैं।

★ ध्वनि वृत्त अर्थात् जब हम किसी संकल्प को मन में रिपीट करना शुरू करते हैं तो इससे ध्वनि की तरंगें बनती हैं। कुछ समय बाद ये तरंगें वृत्त का रूप ले लेती हैं और घूमना शुरू कर देती हैं। जितना ज़्यादा सोचते हैं, यह चक्र शक्तिशाली बनता जाता है ।

★ लगातार की गति एक गोलाई में घूमने लगती है, जिससे शक्ति बनने लगती है। जैसे एक बार लट्टू को घुमा देने से बहुत देर तक घूमता रहता है, ऐसे ही योग में भगवान के किसी एक गुण को याद करते रहते हैं तो ऐसा बल बनता है जो रुकता नहीं। उसको कोई तोड़ नहीं सकता। ये संकल्प किले का काम करता है व हम और हमारे साथ रहने वाले भी विकारों से प्रभावित नहीं होते। अगर इसको और दृढ़ कर लें तो महात्मा बुद्ध की तरह जहां हम ठहरेंगे उसके 20 किलो मीटर के क्षेत्र में अपराधी लोग भी अपराध नहीं करेंगे। अगर सेंटर पर रहते हैं तो हमारे संकल्प किले का काम करेंगे। सभी भाई-बहनों की संकल्प शक्ति मज़बूत रहेगी ।

★ यह गोले दो प्रकर के होते हैं। 1) संकल्प के आधार पर तथा 2) भावना के आधार पर ।

★ किसी भी भावना को बार बार रिपीट करने या दिमाग में रखने से ये विचार भी एक चक्र में घूमते हैं, जिससे यह बहुत शक्तिशाली हो जाते हैं और सृजनकर्ता को घेर लेते हैं। ये व्यक्तित्व को पकड़ और जकड़ लेते हैं और उसे अपने में ढ़ाल लेते हैं। अर्थात् भावना के अनुसार उसका व्यक्तित्व अच्छा या बुरा बना जाता है। अगर आप शक करते हैं तो शक का स्वरूप बन जायेंगे। अगर आप समझते हैं कि लोग दयालु हैं तो आप दया का स्वरूप बन जायेंगे।

★ इसी प्रकार साधारण संकल्प भी जब चक्र का रूप धारण कर लेते हैं तो वह बहुत शक्तिशाली बन जाते हैं। वह रेडियो स्टेशन की तरंगों का रूप धारण कर लेते हैं। जिससे सारा संसार प्रभावित होता है और साधक भी जगमगाने लगता है। रेडियो स्टेशन पर प्रसारण होता है, परंतु वहाँ कोई आवाज़ नहीं होती, परंतु जहां प्रसारण पहुँचता है वहां आवाज होती है। अर्थात् आप जहां रहते हैं वहां लोग आपको साधारण समझेंगे, परंतु आपका मनोबल दूर दराज के लोगों को सुकून देगा।

★ अगर हम भगवान के किसी एक गुण को 11 करोड़ बार सिमरन कर लें तो हमारे में 10 एटम बम के बराबर शक्ति आ जायेगी। अन्त में युद्ध एटम बम से होने वाला है। ऐसे में हमारा एक संकल्प उनके 10 बम नष्ट कर देगा। यह शक्ति अष्ट रत्नों में आ जायेगी। इसलिए युद्ध से डरने की ज़रूरत नहीं है। जो भगवान का बन गया, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह निश्चय पक्का रखो।

ब्रह्मापुर-ओडिशा। 'त्रिदिवसीय मौन साधना कुमार योग भट्ठी' का उद्घाटन करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. माला, खलिकोट विश्व विद्यालय के रजिस्ट्रार पी.के. मिश्र, पारला महाराजा इंजीनियरिंग कॉलेज के अध्यक्ष रंजन कुमार स्वाई, खलिकोट विश्व विद्यालय के उपकुलपति डॉ. अमरेन्द्र मिश्र, राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, ब्र.कु. रुपेश, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. सुधा,सिकंदराबाद, ब्र.कु. नथमल तथा अन्य।

डेरावस्सी-पंजाब। राजकीय माध्यमिक उच्च विद्यालय,बरवाला में खेल एवं युवा विभाग,पंचकुला हरियाणा के सहयोग से 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन' विषय पर सेमिनार के पश्चात् योग टीचर जितेन्द्र सागर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजबाला।

झोझूकलां-हरियाणा। 'गीत-संगीत, प्रवचन के साथ खुशियों भरी ज़िन्दगी' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए समाजसेवी डॉ. भावना बहन, सरपंच दलबीर सिंह गांधी, श्याम लाल गर्ग, दर्शना गर्ग, ब्र.कु. अविनाश,महा., ब्र.कु. उर्मिला,माउण्ट आबू, ब्र.कु. वसुधा तथा अन्य।

मॉरीशियस। सेंट्रल फ्लैक के हार्मनी हाऊस पर आयोजित कार्यक्रम में 'सुपर माइंड सुपर फ्यूचर' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शक्तिराज,माउण्ट आबू,इंडिया।

भादरा-राज.। शिवजयंती पर आयोजित कार्यक्रम में लॉर्ड कृष्णा स्कूल के चेयरमैन विजय चौबे व उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकांता।

खोरधा-ओडिशा। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी में दृष्टिहीन भाई बहनों को ईश्वरीय ज्ञान सुनाने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. अनुराधा तथा अन्य।